Dr. Sunil kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:-21-9-20
TO-Next-class

Psychosexual development Stages

गुदावस्था (Anal stage)

(ii) गुदाधारणात्मक अवस्था (Anal Retentive Stage):- इस अवस्था में शिशु को मल-मूत्र को कुछ देर तक रोककर रखने में लैंगिक आनन्द आता है। मलमूत्र को कुछ देर तक रोककर रखने में शिशुओं के मूत्राशय (bladder) एवं आंत (bowel) में एक हल्का सा तनाव उत्पन्न होता है जिससे उसे लैंगिक आनन्द मिलता है। परन्तु इस तनाव से वह अधिक देर तक आनन्दित नहीं हो सकता है, क्योंकि उसे कुछ देर बाद मल-मूत्र का त्याग कुछ देर के बाद करना ही पड़ता है। इससे शिशुओं में निराश उत्पन्न होता है जो बाद में चलकर विशेष व्यक्तित्व शीलगुणों (personality traits) का सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा की ऊपर कहा गया है, मल-मूत्र त्यागने के लिए दी गयी प्रशिक्षण (toilet-training) में यदि माता-पिता उदारता न दिखाकर काफी कठोरता एवं क्रूरता दिखलाया जाता है, तो शिशु जानबूझकर अपने मल मूत्र को अधिक समय तक रोक लेते हैं तो इससे कब्जियत बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया से शिशुओं में अपने माता पिता के प्रति अवज्ञा भाव (feeling of disregard) प्रकट करने का सुअवसर मिलता है (जिससे उसे एक तरह की आत्म-संतुष्टि मिलती है) तथा साथ ही साथ शिशु

Ajanta PRODUCTS Oxford PTO.

Scanned with CamScanner

इसके द्वारा अपने माता पिता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के एक साधन के रूप में भी इस प्रयोग करने में सफल हो पाता है। फ्रायड के अनुसार यदि माता पिता मल-मूत्र त्यागने की प्रशिक्षण देने में क्रूरता एवं कठोरता बरतते हैं, तो ऐसे शिशुओं में वयस्क होने पर विशेष व्यक्तित्व का विकास होता है जिसे गुदा धारणात्मक व्यक्तित्व (Anal Retentive Personality) कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व में दृढ़ता (Obstinancy), कंजूसी (Stinginess), क्रमबद्धता (Orderliness) तथा समयनिष्ठा (Punctuality) आदि के शीलगुण की प्रधानता होती है।

गुदावस्था (Anal Stage) की एक विशेषता यह है कि इस अवस्था की समाप्ति तक अहम (Ego) का विकास काफी हो जाता है और बच्चों का व्यवहार वास्तविकता के सिद्धान्त (Reality Principle) द्वारा बहुत हद तक निर्देशित होने लगता है। शिशुओं में लिंग भिन्नता (Sex distinction) का भी ज्ञान प्रारंभ हो जाता है यानी वे लिंग के रचनात्मक भिन्नता से परिचित हो जाते हैं। परन्तु इन सबके बावजूद इस अवस्था में मुंह, गुदा (Anus) एवं योनि (Vagina) आदि में कोई अन्तर वह नहीं समझता है। वह स्तन (Breast), शिश्न (Penis) एवं मल (Faces) को भी अचेतन के रूप से समान ही समझता है।

Next class

Scanned with CamScanner